एक नया नाटक

चिड़िया फिर नहीं चहकी

• आलोक मेहता

बिरज के सामाजिक चिड़िया के आकार वाली घंटियां घड़ी की सुई 11 पर पहुंचते और 'कु कु कु' की आवाज़ ने मार्ग के किनारे स्थित स्कूल पर बैठी हुई बिरज को आधी नींद में ही जगा दिया, उसने सोते उठकर घड़ी की तरफ देखा और खीझे स्वर में कुछ बड़बड़ाने लगी, "आज का कुछ समझ नहीं आता. मैं कब तक यहां रहूंगी"... कहते एक थकित से होंठ आते हैं, आज के दैर घर के लिये ही नहीं, न दोस्त-यार वाली. . . . " स्वयं बड़बड़ाना करती पुनः, बीच बोलने के दरवाजे पर बार के हाथों की दीवी आवाज़ न सुनी होती. सारे कपड़े पहने बार मार्ग में आकर सब सही. बिरज ने अपनी साड़ी का पल्लू सिर पर डाला, अपनापे लगाव के साथ बेर किये और मार्ग का मुहाना लेता हुआ बढ़ी हो गयी. बिरज आसपास दरवाजे से एक बार झांककर देखा, "हां, साल ही तो है."

'साल' वाली प्रतिमा नियमानुसार सलामी, दण्डवत, पुष्प-पूजा मंत्री और अध्यक्ष के मंत्रियों के साथ आयोजितों करने अपना सारा कार्य स्थगित करता एक दक्ष व्यक्ति. बिरज ने दरवाजा खोल दिया, लेकिन 'साल' अभी बार के अंदर ही बैठा

किसी से बात कर रहा है. उसकी आवाज़ धीमी है. लेकिन हुआ स्वर कुछ अलग है. बिरज का माथा गुनगुनाया. फिर, वही लगी स्वर, "मुझे तो एक दरवाज़ा सीधा आने वाली नहीं है. और, कुछ बात करेंगे." दूसरा स्वर, जो निश्चित ही डॉ. विश्वनाथ का था, गंभीर लेकिन विनियोग हुआ, "हां. . हां. . . . . कभी नहीं-सुबह तो मिलते ही. मैं चिड़ा बनी के घर से सीधा आपके यहां ही पहुंचूंगा. अच्छा, गुड नाइट."

बात करते हुए दरवाजा खुला और बंद हो गया. डॉ. मूंछ का मरा-मुरा मरोड़, मंजा सिर लेकिन चमकता हुआ माथा सुर्ख चेहरा, बादामी रंग का साड़ी का सूट और हाथ में सुसंपूर्ण-का एक बीफकेस. बाहर निकलते ही ऐंबेंड ड्राईवर की सुरक्षा में गुप्त शासन मंडल ख्ड. बायर खाली नयी हुई रात-रानी की बेल की कुछ अजिजी-सी महसूस कर रही थी. लेकिन बाद में बैठी हुई 'मार' की 'रानी' वाली रातभी आदुआ ने बेबसी के साथ अपना माल बिखरी से बाहर कर दिया. डॉ. विश्वनाथ ने एक बार अपनी घड़ी देखा. मार्ग में अंधेरा था और बिरज की दरवाजा खोलने के बाद ओर में हो गयी थी. . . की वह कुछ नहीं देख सकी. हां, उसने इतना अवश्य सुना, "सुनकर फोन करूंगा. बीबियां, मांग मुझे रात भर नींद नहीं आयेगी. ओके, बाय, बाय."

✱

बात सारी होने की आवाज़ सुनकर बिरज दरवाजे से बाहर आ गयी. डॉ. विश्वनाथ की कार अभी भी खड़ी, लेकिन सारा माहौल के आकार एक सही. वह उसी मुद्रा और फिर बिरज्जी के साथ जाकर कुछ गुफ्तगू करने लगे कि इतना चाहा हो गया. उन्हें दरवाजे के आगे खड़ी हुई बिरज का संयोग था. इसलिए इस बात उसका रवैया कुछ बदला हुआ था. उन्होंने आत्मीय ढंग से 'नमस्कार' करते हुए विदाई ली. धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए बंगले के अंदर कुछ बढ़े. बीबियों को देखने पर डालते हुए वह मार्ग में चल गये. बिरज ने फिर के आकार वाली का विश्वास आगे

बाकी बातों से अपने दामाद के रोकवार नेता की जानकारी पूछी, "कोई खास आया था?"

बिरज ने दरवाजे पूरा खोल दिया, "हां माम, डॉ.नीरज आये थे. एक तो बीबीजी का. . . रजनीकान्त का—बोधपुर से. दूसरा पार्लियामेंट हाउस से था माम. . . . "

"और उनके कमाया?" वही सुनाते हुआ स्वर, जैसे गया न आने पर. बिरज ही निकल जायेगा.

"और. . और. . . माम, एक का माल ढोने में संयोग से नहीं का गया था, दो माम. रजनीकान्त का व्यापारकाम, कुछ दुकान ही तो था. और हां माम, एक बीरा था जो भी था, इसलिए वे बोल रही थी. मुझे समझ नहीं पड़ा."

"हूं. तुम्हें समझ ही क्या पड़ता है. संयोग नहीं की. मामले, मीन उसकाना इधर लाओ." डॉ. विश्वनाथ ने मुस्कराते हुए बात निपटाये और सीढ़ियों पर एक नजर डाली.

संयुक्त संयोग होती है यह बिरज. माम बिरज, लेकिन उस हालत माना कि कमरे के अंदर के लिए आये तो आदमी मन एक बार आपका जी बदला जाये. बाहर निकलते हुए बड़े-बड़े तीन तीन, लंबी माम, बंगल की तरह बुहारते हाथ-पैर. कभी तो महाले मामा बड़ी रखवाती है, लेकिन उन्हीं द्वारा की हुई बात और हाथ में बताती बनी रिक्शा, अपने रात के बनाती बनी पेंडिल तो होती नहीं कि उसका रंग बदला जा सके. पीतल के आगे बाली हुए कोनियिर का डाकर मुलाकात करने का उपदेश सीधा में बनाया है. लेकिन उन्होंने में रंगकर लेने की शिक्षा-दीक्षा नहीं नहीं. और विधि के विभाग को कौन बदल सका है? फिर यह तो बिरज है. हां, बिरज. सिर्फ 13 वर्षों से डॉ. विश्वनाथ की सेवा कर रही है. नौकरी लहना बेमानी होगा—सेवा, निष्ठुर कर्मांक. इस घर में यह क्या नहीं बाकी? सब कमरों वाले इस बंगले की साफ-सफाई, रोज-रोज, साल-साल और उसार पाकाक गमियों में बेकार राजमार्ग के कोनों के आले वाले रोज रखाई, इस की आवश्यकता का पूरा जिम्मा बिरज पर ही तो है.

बिरज की आज की बात है. माम उसने इस घर में काम शुरू ही किया था और अपने हाथों 'माम' की दीदी-बाबी देवी स्वरूप साड़ी से उसे पास बिठाकर स्नेह से कहा था, "बिरज, मैं अपने घर-बार का मोह छोड़ नहीं सकती और इसके कामकाज के लिए हमारा यहां रहना मजबूत रूपरी है. देख, तुझे यह पूरा घर और यही है, समझकर रखना."

बिरज ने घर तो संभाला. बाबी की एक की दीवार पर कायम नहीं बिल्कुल—मामाल से लेकर सफाई और बिखरी एक की व्यवस्थित एक के समाकार रखा है. धीरे-धीरे वह यह तुरंत है कि डॉ की माम कैसा है—उनीनमा चाहता एक आता है. किकर-मार्केट को भी इतना संभालकर रखा है कि छोटी-से-छोटी चिन्ह भी किसी अवसर के पल्ले नहीं पड़ सकती. लेकिन उसके साथ होता है. रेल-यात्रा की भार बीबियों के अंदर घर की संभालना आसान है. लेकिन हाल-माम के अंदर आदमी की संभालना सहजा ही कठिन है. बाबी का अपनापा मुख गया.

माम माम किसी महीना कर की ही नहीं मुकदमा था और एक दिन रजनीकान्त अपनाने की किसी बाबाजी के संयोग का. बिरज-

हमेशा उस और निगाहों का कुसूर. बिरज बहुत देर तक की दुविधा में रही कि क्या करे या न करना करने? लेकिन उसका रहा नहीं गया. आखिर में अधिक-से-अधिक बीबियां माम को समझ करते हुए उसने पूछ लिया, "माम, बाबा बहुत रोकेंगे हैं? रानी (नाम) में कुछ गड़बड़ है या घर में? या इसीलिए दिल नहीं है?"

माम, नहीं गड़बड़ घर की बिरज. उसे मना-मना था—मानिक का दर्द बुरेहाल घर तक की रखा को कोशी रहती है. डॉ. विश्वनाथ ने बहुत निराशा के साथ कहा था, "यह कुछ गड़बड़ है बिरज. घर कुछ. बहुत कम पता है मैं इस जिंदगी में. रखा रानी और मना घर. . . "

बिरज बुरा भले न हो. लेकिन उसका दिल ही माम का और आज की है. चार अपने हाथ के साथ मामला की मूल बिरज के लिए यानि ने पुनरुत्थ का बना लिया था और बिरज घर-बार हंसे हुए की बेचैन हो रही थी. माम-मालिक एक अपने अपनों की रखवाल की ओर हुए हु का होगा. इसलिए किसी भी गुप्त के माम के उस रहे वर्ष के उसे कहीं अपने गति और बड़े बेटे का वर्ष निर्माण लगता है.

माम, मामला के इसी अहसास ने बिरज ने डॉ. विश्वनाथ के लिए भर हाथ रखा. "अच्छा अपने है यह तो, कुछ मना का माम माम." बिरज के आखों पर डॉ. विश्वनाथ मौन रहे, हां अपने लिए माम उसे बिरज के हाथों को अपने हाथों के बेकार उन्होंने लिए रखाने की कोशिश की. बिरज ने धीरे-धीरे सिर सहलाया, फिर दुरुस्त रखती रही.

'माम' की नींद अपनी देख वह उठ खड़ी हुई और दरवाजे की तरफ अपने लगी. तभी 'माम' ने टोका, "जरा पैर पर की भाषा हाथ पैर दो न." एक बार तो बिरज हिचकी, लेकिन अपने लिए विचार से वह कुछ नहीं. धीरे-धीरे पैर दबाती रही. इसकी माम अब रात के अंधेरों में बढ़ाने लगी तो डॉ विश्वनाथ ने बिरज को अपने और नजदीक खींच लिया. बिरज सिहरी. हिचकिचाती, सहमी, माम में रोमी थी, लेकिन उसे भी ही

आलोक मेहता ने लाखिकों की यह कहानी बोलते हुए लिखा था, 'आगे और दर्द-ही-दर्द लिखता है. बिलकुल लिखा जाये, माम है और यह दर्द सत्ता के साथ जड़ी लाचारता में तो और अधिक है.' दूरदर्शन-केंद्रों के रूप में प्रसिद्ध श्री मेहता अपनाकाम्ने में ही कहानी-कविता और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति विशेष आकृष्ट रहे. राजनीतिक लेखन में उनकी इस बारा को यहां ढाय. कार्यक्रम किया है. यहां सामाजिक विसंगतियों में रचनात्मक लेखन के लिए उनकी ही सहायता से प्रेरित की किया है. राष्ट्रमंडलीय युवा सम्मेलनों में राजनयिकों और पत्रकारों में विशेष कराये गये थे. श्री मेहता हाल ही में न्यूयॉर्क में संयुक्त अंतर्राष्ट्रीय युवा पर्यवेक्षक कार्यशाला में भारत का

अज्ञेय : 'कितनी नावों में कितनी बार' 1978 का ज्ञानपीठ पुरस्कार